प्रेरणा- काव्य

(भावनात्मक कर्म)

ख्वाब हो तेरे शायद शीशे के

बुलंद रख फिर भी तू अपने इरादे -

इक ना इक दिन तो हकीकत होंगे ये

कोशिश तू अपनी सदा रख जारी -

इन छोटी-मोटी हार से मायूस ना होना

यह तो काँटे हैं जीने की राह के -

जीत न होगी कभी अच्छे या बुरे की

यह तो कदम चूमती है सच्ची भावना की -